श्री हनुमान चालीसा

दोहा

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि ।

बरनउँ रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि ॥

बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार ।

बल बुधि बिद्या देहु मोहि, हरहु कलेस बिकार ॥

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर ।

जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥1॥

राम दूत अतुलित बल धामा ।

अञ्जनि-पुत्र पवनसुत नामा ॥2॥

महाबीर बिक्रम बजरङ्गी ।

कुमति निवार सुमति के सङ्गी ॥3॥

कञ्चन बरन बिराज सुबेसा ।

कानन कुण्डल कुञ्चित केसा ॥4॥

हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै ।

काँधे मूँज जनेउ साजै ॥5॥

सङ्कर सुवन केसरीनन्दन ।

तेज प्रताप महा जग बन्दन ॥6॥

बिद्यावान गुनी अति चातुर ।

राम काज करिबे को आतुर ॥7॥

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया ।

राम लखन सीता मन बसिया ॥8॥

सूक्ष्म रूप धरि सियहि दिखावा ।

बिकट रूप धरि लङ्क जरावा ॥9॥

भीम रूप धरि असुर सँहारे ।

रामचन्द्र के काज सँवारे ॥10॥

लाय सञ्जीवन लखन जियाये ।

श्रीरघुबीर हरषि उर लाये ॥11॥

रघुपति कीह्ही बहुत बड़ाई ।

तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥12॥

सहस बदन तुह्मारो जस गावैं ।

अस कहि श्रीपति कण्ठ लगावैं ॥13॥

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा ।

नारद सारद सहित अहीसा ॥14॥

जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते ।

कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ॥15॥

तुम उपकार सुग्रीवहि कीह्ा ।

राम मिलाय राज पद दीह्ा ॥16॥

तुह्मरो मन्त्र बिभीषन माना ।

लङ्केस्वर भए सब जग जाना ॥17॥

जुग सहस्र जोजन पर भानु ।

लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥18॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं ।

जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ॥19॥

दुर्गम काज जगत के जेते ।

सुगम अनुग्रह तुह्मरे तेते ॥20॥

राम दुआरे तुम रखवारे ।

होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥21॥

सब सुख लहै तुह्मारी सरना ।

तुम रच्छक काहू को डर ना ॥22॥

आपन तेज सह्मारो आपै ।

तीनों लोक हाँक तें काँपै ॥23॥

भूत पिसाच निकट नहि आवै ।

महाबीर जब नाम सुनावै ॥24॥

नासै रोग हरै सब पीरा ।

जपत निरन्तर हनुमत बीरा ॥25॥

सङ्कट तें हनुमान छुड़ावै ।

मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥26॥

सब पर राम तपस्वी राजा ।

तिन के काज सकल तुम साजा ॥27॥

और मनोरथ जो कोई लावै ।

सोई अमित जीवन फल पावै ॥28॥

चारों जुग परताप तुह्मारा ।

है परसिद्ध जगत उजियारा ॥29॥

साधु सन्त के तुम रखवारे ।

असुर निकन्दन राम दुलारे ॥30॥

अष्टसिद्धि नौ निधि के दाता ।

अस बर दीन जानकी माता ॥31॥

राम रसायन तुह्मरे पासा ।

सदा रहो रघुपति के दासा ॥32॥

तुह्मरे भजन राम को पावै ।

जनम जनम के दुख बिसरावै ॥33॥

अन्त काल रघुबर पुर जाई ।

जहाँ जन्म हरिभक्त कहाई ॥34॥

और देवता चित्त न धरई ।

हनुमत सेइ सर्ब सुख करई ॥35॥

सङ्कट कटै मिटै सब पीरा ।

जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥36॥

जय जय जय हनुमान गोसाईं ।

कृपा करहु गुरुदेव की नाईं ॥37॥

जो सत बार पाठ कर कोई ।

छूटहि बन्दि महा सुख होई ॥38॥

जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा ।

होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥39॥

तुलसीदास सदा हरि चेरा ।

कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ॥40॥

॥दोहा ॥

पवनतनय सङ्कट हरन, मङ्गल मूरति रूप ।

राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ॥

By – HindiSoch.com